12 ईरान

भारत के पश्चिम में ईरान देश है। बहुत पुराने समय से ईरान और भारत के बीच लोग आते जाते रहे हैं। इस कारण दोनों देशों की संस्कृति में काफी समानताएं हैं। दोनो देशों के बीच किन-किन बातों में समानताएं होंगी कक्षा में चर्चा करो।

एशिया के मानचित्र में देखो ईरान कहां स्थित है। भारत से यदि हम ज़मीन के रास्ते ईरान जाना चाहें तो हमें कौन से अन्य देश पार करने होंगे? यदि बम्बई से जलयान में बैठकर हम ईरान जाना चाहें तो किन खाड़ियों व सागरों को पार करना होगा?

ईरान के पड़ोस में और कौन से देश हैं?

ईरान के उत्तर में कैस्पियन सागर नाम की एक बड़ी झील है। इसे भी एशिया के नक्शे में देखो।

मानचित्र 1 एशिया में ईरान की सिथति

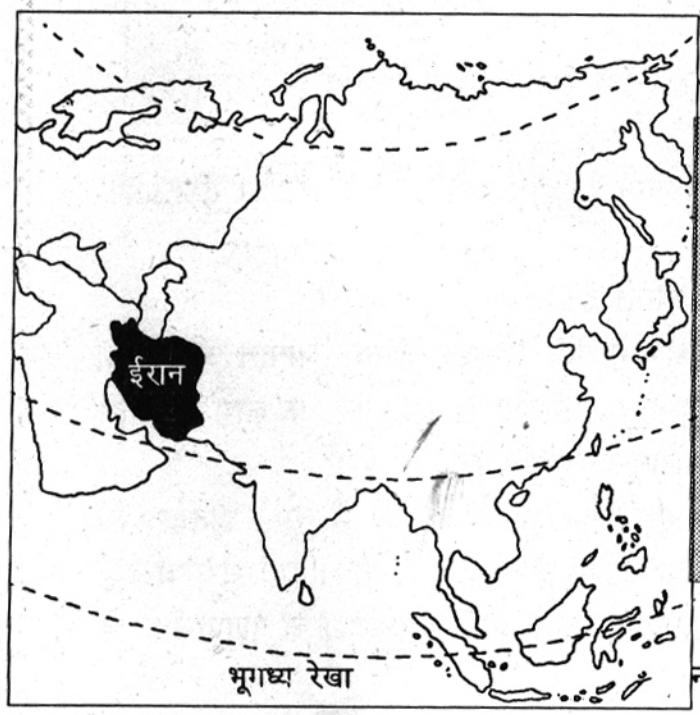

ईरान भूमध्य रेखा से कितनी दूर है, मानचित्र 1 में देखो।

क्या यहां इंडोनेशिया जैसी साल भर गर्मी पड़ेगी?

ईरान का मानचित्र

मानचित्र 2 को ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि ईरान देश का आकार कटोरे जैसा है। कटोरा किनारे से ऊंचा और बीच में गहरा होता है, वैसा ही है ईरान। ईरान के चारों ओर ऊंचे पर्वत और बीच में पठार है। मानचित्र में देखो और बताओ कि यह पठार भोपाल-विदिशा के पठार से कैसे अलग दिख रहा है।

ईरान देश के किनारे किनारे कौन से पर्वत हैं? किनारों से हट कर अब ईरान देश के बीच में आओ।

यह इलाका कैसा है - नक्शा देखकर वर्णन करो।

क्या तुम मानचित्र में रेगिस्तान पहचान सकते हो? कितनी तरह के रेगिस्तान हैं?

ईरान में समुद्र तट के इलाके कौन से हैं - पहचान कर उन पर उंगली फेरो।

यहां की खाड़ियों के भी नाम बताओ।

ईरान में कोई बड़ी नदी नहीं बहती। इस कारण नदी का कोई बड़ा मैदान ईरान में नहीं है।

मानचित्र 1. ईरान

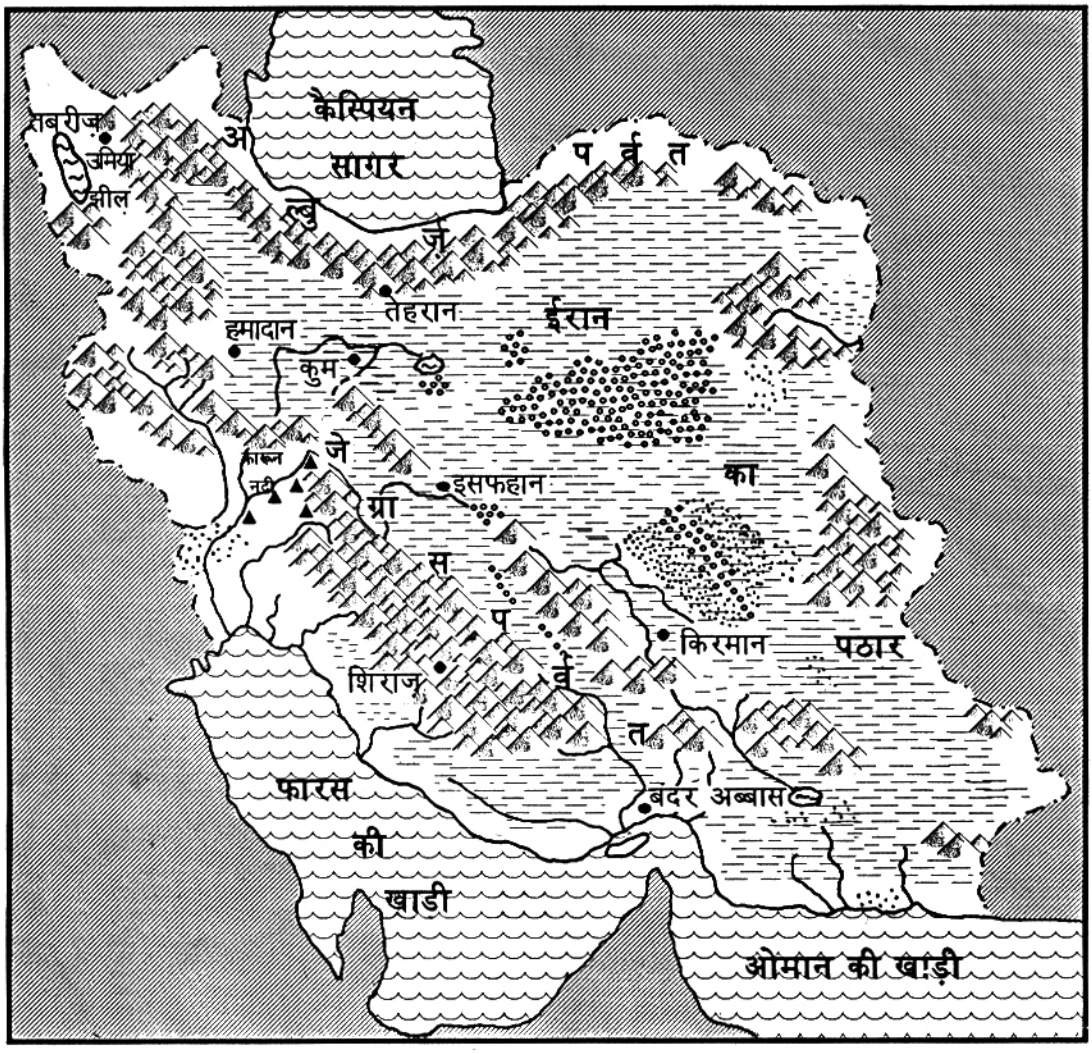

संकेत

ईरान की सीमा		नमक का रेगिस्तान	
सागर		बालू का रेगिस्तान	
अन्य देश		नदी	
पहाड़		झील	
पठार		शहर	
		खनिज तेल का कुंआं	▲

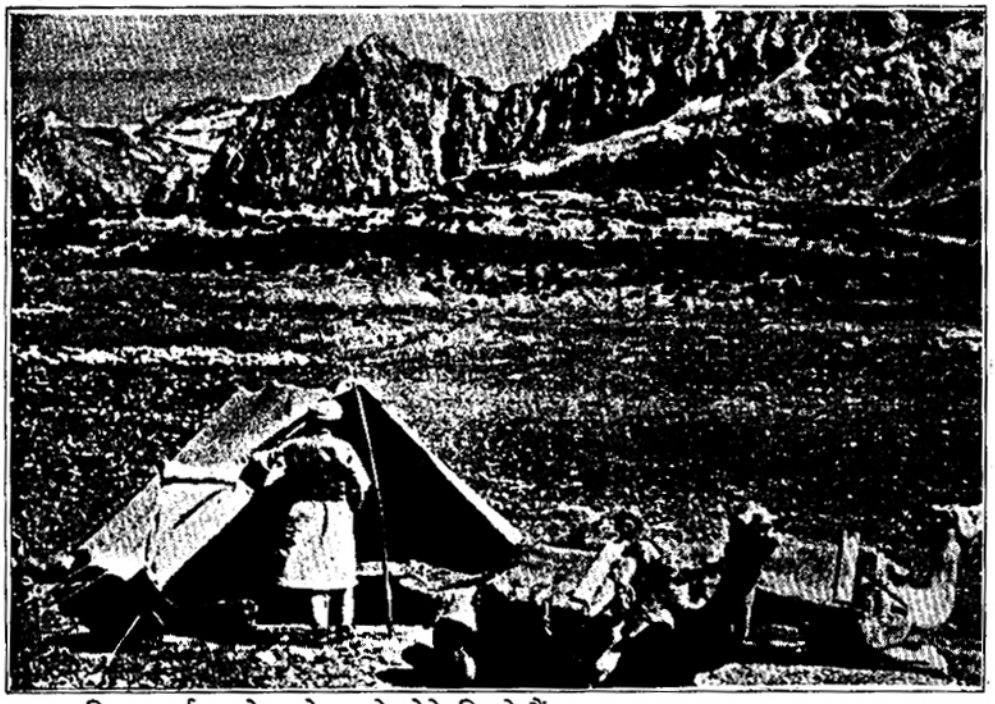

चित्र 1. ईरान के सूखे इलाके ऐसे दिखते हैं

अब चलो, बारी-बारी ईरान के बीच के पठार, फिर उसके पहाड़, फिर समुद्र तट को देखें - वहां के लोगों के जीवन को समझें।

पठार - ईरान के सूखे इलाके

ईरान का अधिकतर भाग पठार है। ईरान का पठार बिल्कुल सूखा इलाका है। यहां बहुत ही कम वर्षा होती है। तुम्हें पठार में कुछ रेगिस्तान भी दिखे होंगे। बहुत ही कम वर्षा के कारण नदियों में पानी भी कम बहता है। चारों ओर के पहाड़ों से बह कर आई छोटी-छोटी नदियां बीच के पठार में आकर सूख जाती हैं।

तुम जानते हो कि जब अपने यहां भी खूब गर्मी पड़ती है तो पेड़ पौधे सूख जाते हैं, नदियों, नालों में पानी कम हो जाता है। ऐसे में पानी न गिरे तो हालत और भी खराब हो जाती है।

ईरान के पठार में लगभग पूरे साल ऐसे सूखे की स्थिति बनी रहती है। यहां तक कि दक्षिण और पूर्व में जो जागरोस पहाड़ है और दक्षिण में इन पहाड़ों के नीचे जो समुद्र तट है, वहां भी बहुत कम वर्षा होती है। ईरान के और भागों में इतना सूखा मौसम नहीं होता। पश्चिमी और उत्तरी भागों में तो अच्छी खासी वर्षा हो जाती है। इसलिए वहां नदी नाले बहते हैं। उनके किनारे उपजाऊ मिट्टी के मैदान होते हैं, जहां खेती भी की जाती है। इन इलाकों में जाड़े के मौसम में वर्षा होती है। पहाड़ों पर बर्फ गिरती है, जो पिघल कर नदियों में बहती है।

ईरान में जाड़े में खूब ठंडा मौसम रहता है। जैसा पंजाब या कश्मीर में। लेकिन गर्मी के मौसम में गर्मी भी बेहद होती है। जैसे अपने यहां गर्मी का मौसम होता है, उससे भी कुछ अधिक।

तुम जानते हो कि जब तक वर्षा नहीं होती मई, जून में कितनी गर्मी होती है। ईरान के पठार में तो दर्षा ही बहुत कम होती है, तो सोचो गर्मी कितनी ज़्यादा होती होगी?

ऐसे सूखे इलाके में क्या पेड़ उगेंगे? थोड़ी वर्षा में जंगल तो हो नहीं सकते - सिर्फ कुछ घास व झाड़ियां उग पाती हैं। चित्र 1 देखो।

क्या पहाड़ों पर कुछ वनस्पति है? पहाड़ों के नीचे क्या उगा दिखता है? इस चित्र से वहां के लोगों के बारे में तुम क्या जान रहे हो, 5-6 वाक्यों में लिखो।

वे कैसे घर में रहते हैं? सवारी किस जानवर की करते हैं? क्या वे हमेशा यहीं रहते रहेंगे?

यहां की सूखी और तेज़ गर्मी की जलवायु में क्या खेती हो सकती है? क्या ऐसे क्षेत्र में बहुत ज़्यादा लोग रह सकते हैं? यदि लोग हों तो उन्हें क्या भोजन मिलेगा?

ईरान के सूखे इलाकों में रहने वाले लोगों का मुख्य धंधा पशुपालन ही है। पशुपालन के सहारे कई हज़ार लोग रहते हैं। यहां कई पशुपालक जातियां हैं जिन्हें लूर, बख्तियार, बलूची, काश्काई आदि नामों से जाना जाता है। ये कबीले झाड़ियों और घासों पर अपनी भेड़-बकरियां चराते फिरते हैं।

क्या तुम सोच सकते हो कि ये लोग भेड़-बकरी की जगह गाय भैंस क्यों नहीं पालते?

ये पशुपालक कबीले पहाड़ की दोनों तरफ की तलहटियों में रहते हैं। जाड़े में पहाड़ पर तो ठंड खूब रहती है, इसलिए नीचे एक तरफ पठार पर व दूसरी तरफ समुद्र के तट पर, वे अपने जानवर चराते फिरते हैं। तब पहाड़ों पर बर्फ जमी रहती है। जाड़े में मैदान में चारा मिलता है। गर्मी आते-आते जब नीचे का चारा भी खत्म होने लगता है, ये लोग पहाड़ों पर अपने जानवरों को चराने चल पड़ते हैं। गर्मी में पहाड़ों पर बर्फ के पिघलने से कुछ हरियाली हो जाती है, नई मुलायम घास उग आती है। (चित्र2) जबकि नीचे पठार पर तो

चित्र 2. एक बूढ़ा काशकाई चरवाहा अपनी भेड़ों को ऊंचे पहाड़ों पर गर्मी में उगी मुलायम घास चरा रहा है। वह एक महीने पहले फारस की खाड़ी के तट से चला था और 200 मील लंबी यात्रा पूरी कर पहाड़ के चरागाहों पर पहुंचा है

गर्मी के मौसम में कुछ उगता ही नहीं।

बताओ घास के अलावा जानवरों को और किस चीज़ की ज़रूरत होती है?

तो ये कबीले ऐसे भागों से होकर जाते हैं जहां उन्हें और उनके पशुओं को पानी मिल सके।

जानवरों को लेकर घूमने वाले ये लोग अपना सामान लादने के लिए गधे और घोड़े भी पालते हैं। बहुत सूखे भागों में इस काम के लिए ऊंट भी पालते हैं।

बहुत सूखे भागों में ऊंट ज़्यादा काम क्यों देता है - बता सकते हो?

अपनी भेड़ों को चराते फिरते ये लोग क्या एक जगह मकान बनाकर रह सकते हैं?

तुम ध्रुवीय प्रदेश के पशुपालक लोगों के बारे में भी पढ़ चुके हो। वे लोग अपने घर रेनडियर खाल से बनाते हैं।

चित्र 3 में देखो ईरान के पशुपालक लोगों का एक कैम्प। उनके तंबू किस चीज़ के बने होंगे?

भेड़ों से इन्हें बहुत ऊन मिलती है। ऊन का कपड़ा या नमदा बनाकर उसे लकड़ी के ढांचे पर तान कर तंबू बनाए जाते हैं।

लोग कुछ दिन इन तंबुओं में रहते हैं, फिर चारे की तलाश में आगे बढ़ना होता है तो तंबू उखाड़कर, जानवरों पर लादकर दूसरी जगह चल देते हैं।

इन लोगों को बहुत सा भोजन भी अपने पशुओं से मिल जाता है, जैसे-दूध व मांस। ज़रूरत की अन्य चीज़ें तथा अनाज ये लोग दूसरे लोगों से लेते हैं। बदले में उन्हें चमड़े व ऊन की बनी चीज़ें दे देते हैं।

चित्र 3. एक पशुपालक कबीले का डेरा

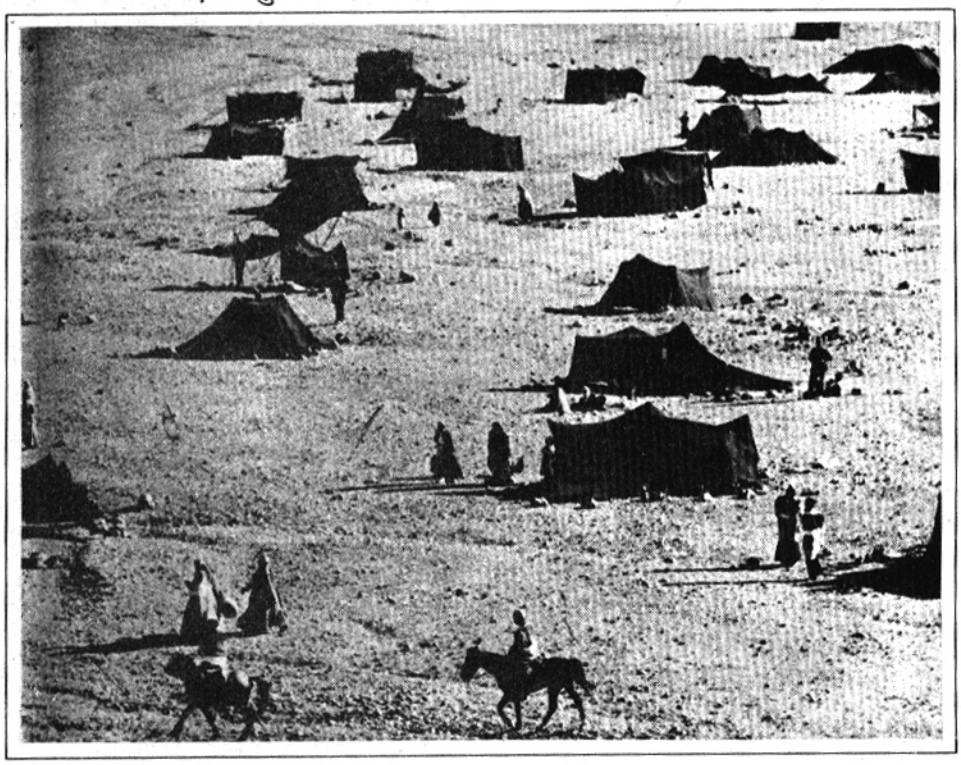

नखलिस्तान

पठार के बीच के बहुत सूखे भाग में रेगिस्तान हैं - जहां सिर्फ रेत ही रेत मिलती है। जैसे अपने देश में राजस्थान में थार रेगिस्तान है। दिन में तेज़ गर्मी और आंधी चलती है, रेत उड़ती है। दूर-दूर तक न पेड़ पौधे, न पानी, न कोई रास्ता दिखता है।

ईरान में भी रेगिस्तानी इलाकों में लोग केवल वहीं रहते हैं जहां पानी के लिए कुएं या फिर सोते हैं या जहां ज़मीन के नीचे पानी मिल जाता है। ऐसी जगहों को नखलिस्तान कहा जाता है।

चट्टानों की दरारों के बीच इकट्ठा हुआ पानी अपने आप बह निकलता है, इन्हें सोते कहते हैं।

चित्र 4 में एक नखलिस्तान का दृश्य देखो। पानी के कारण यहां पेड़-पौधे दिख रहे हैं। ये खजूर के पेड़ हैं। खजूर ऐसे प्रदेशों में बहुतायत में होता है।

अधिक पानी मिलने पर नखलिस्तान में रहने वाले लोग सिंचाई कर के कुछ अनाज भी उगा लेते हैं। कई जगहों पर तो

चित्र 4. नखलिस्तान

पानी के लिए ज़मीन के नीचे नालियां बना ली गई हैं। ये कई मील लम्बी होती हैं। चित्र 5 देखो। पानी के लिए इन लोगों को कितना प्रबन्ध करना होता है।

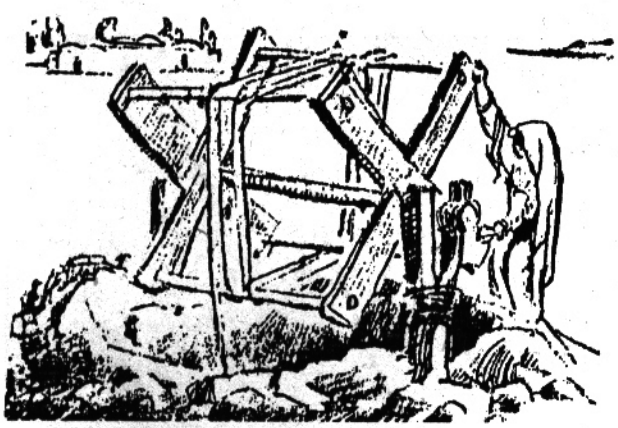

चित्र 5. पहाड़ों से पानी लाने की व्यवस्था

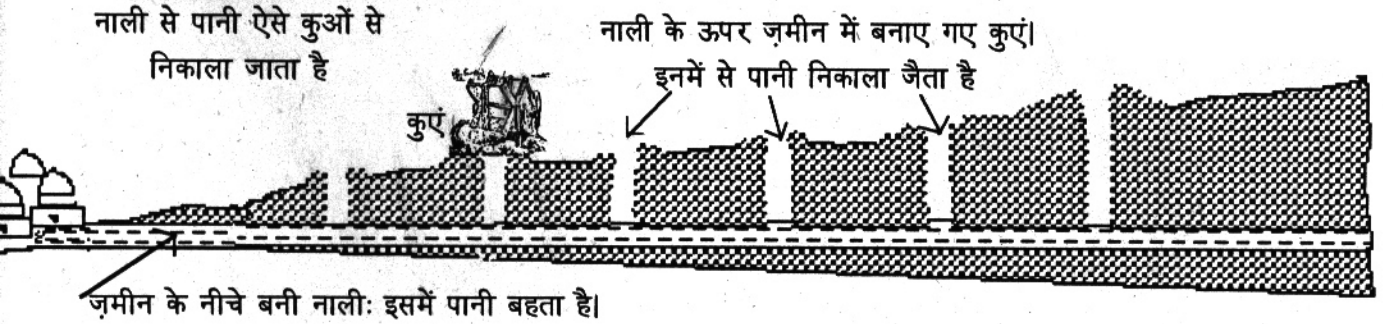

उत्तर और पश्चिम के पहाड़

बीच के पहाड़ और रेगिस्तान से निकलकर चलो ईरान के पश्चिम और उत्तर के पहाड़ों पर पहुंचें। तुम जान चुके हो कि यहां काफी वर्षा होती है। यहां पहाड़ों पर जंगल भी मिलते हैं। चित्र 7 देखो। चित्र देखकर लगता है कि यहां कुछ वर्षा होती होगी।

बहुत ऊंचे पहाड़ों पर जहां बर्फ जमी रहती है, नुकीली पत्ती के कोणधारी पेड़ भी मिलते हैं।

जहां भी पहाड़ों के बीच थोड़ी भी खेती के लिए ज़मीन मिल गई है, लोग गांव बसाकर रहने लगे हैं। (चित्र 6) तुमने जापान और इंडोनेशिया में भी देखा था कि पहाड़ों पर बहुत ज़्यादा लोग नहीं रहते - बस, कहीं-कहीं छोटी बस्तियां होती हैं। ईरान की इन पहाड़ी बस्तियों के लोग अपने खेतों पर गेहूं, कपास, तम्बाकू, जौ, चुकन्दर और तरह-तरह के फल पैदा कर लेते हैं।

इन खेती-किसानी करने वाली बस्तियों को घुमक्कड़ कबीलों के हमले का डर बना रहता है। तो ये लोग ऊंची दीवारों के घर बनाते हैं। हमले

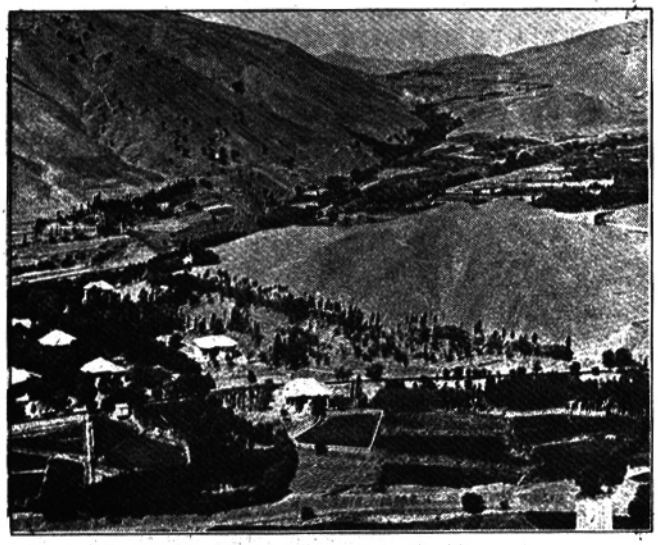

चित्र 6. सूखे पहाड़ों के तले खेत व गांव

से बचाव के लिए शहर के चारों ओर दीवार व मज़बूत दरवाज़े भी बनाते हैं। ये लोग मुख्य रूप से रोटी, मांस, फल व सब्ज़ी खाते हैं।

कैस्पियन सागर के तट का मैदान

अब चलो पहाड़ों से उतरकर ईरान के बिल्कुल उत्तर में पहुंचें। यह कैस्पियन सागर के तट का मैदानी भाग है।

मानचित्र 1 में देखो, यह किस पर्वत के नीचे का प्रदेश है?

यहां खूब वर्षा होती है। अच्छी खेती होती है। तरह-तरह की फसलें, यहां तक कि चावल भी उगाया जाता है।

इस इलाके के लोग रोटी के बजाय चावल ज़्यादा खाते हैं। यहां फल और मेवे भी खूब होते हैं। यहां का एक चित्र देखो (चित्र 7)। पहाड़ों के नीचे पेड़ और फिर हरे भरे खेत दिखते हैं।

इस चित्र में तुम वहां के लोगों का पहनावा भी देख सकते हो। औरतें ढीला पजामा और कुर्ता पहनती हैं और सिर पर कपड़ा बांधती हैं। ईरान में आदमी कमीज़ और ढीला पजामा पहनते हैं। जाड़े में लम्बा कोट भी पहनते हैं।

चित्र 7. कैस्पियन सागर के किनारे के मैदान

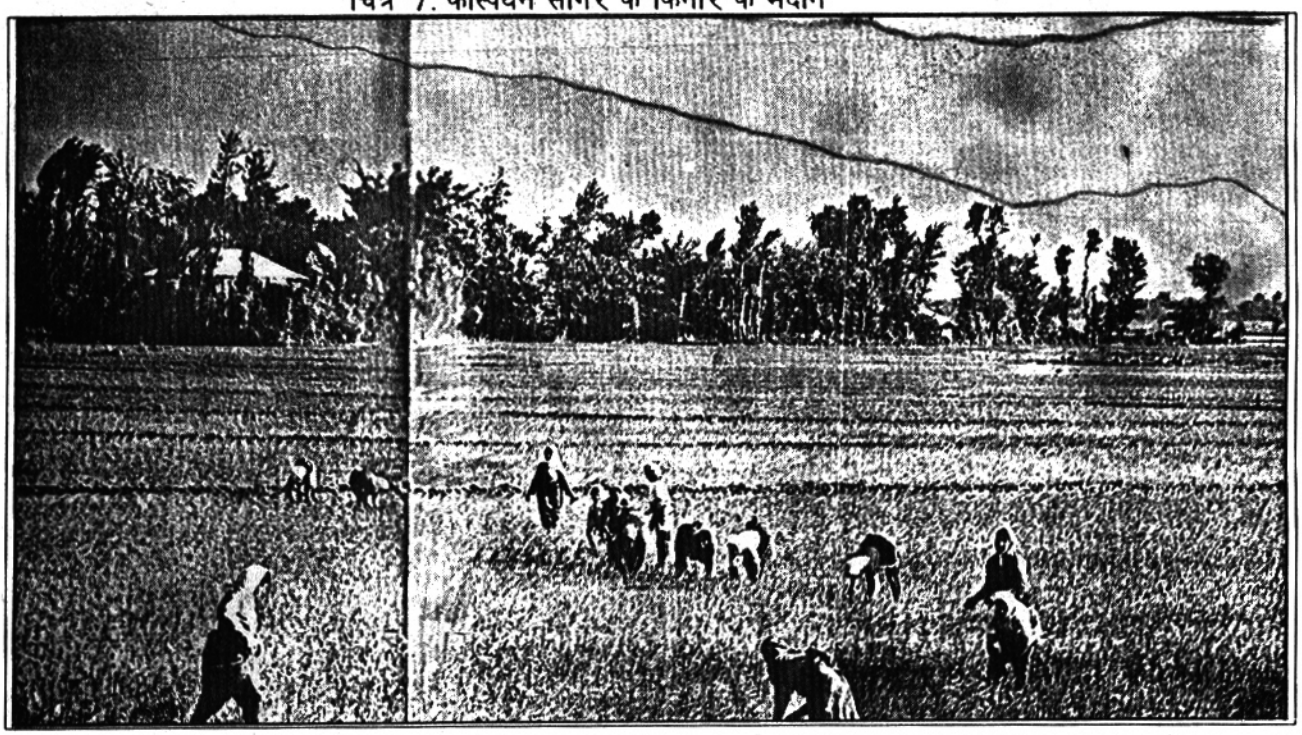

ईरान के नगर

ईरान जैसे सूखे क्षेत्रों में पानी का बहुत इंतज़ाम करना होता है। ईरान के नगर उन्हीं स्थानों पर बसे हैं जहां लोगों को पानी मिलता है। पर्वतों के बीच जहां पानी मिलता है, भूमिगत नालियों या सुरंगों से पानी नगरों तक लाया जाता है। परंपरागत व पुराने नगरों के बीच छोटी नहरें भी मिलती हैं।

इस तरीके से आसपास की भूमि की सिंचाई कर के खेती भी होती है। कई जगह ज़मीन के नीचे टंकियां बना कर उनमें भी पानी इकट्ठा करके रखा जाता है।

ईरान की राजधानी तेहरान है। यह शहर पहाड़ों के तले बसा है।

मानचित्र 2 देखकर बताओ कि तेहरान के पास कौन से पहाड़ हैं?

ईरान के अन्य प्रमुख नगर इस्फहान, शिराज़, अबादान, किरमानशाह आदि हैं। मानचित्र में इन नगरों को भी ढूंढो।

ईरान में आबादी भारत से बहुत कम है। पानी की प्राप्ति व भूमि के अनुरूप ही लोग बस गए हैं। जहां खेतिहर भूमि है वहां अधिक लोग बसे हैं।

पर, एक अन्य बहुमूल्य चीज़ ने ईरान को बहुत धन दिया है। वह है, खनिज तेल।

ईरान में खनिज तेल

इंडोनेशिया में खनिज तेल निकालने और उसके उपयोग की बात तुमने पढ़ी थी। ईरान में खनिज तेल पुराने समय से थोड़ा बहुत जलाने के काम आता था। उस समय खनिज तेल रिस कर धरती के ऊपर बहने लगता था। उसको लोग इकट्ठा कर के जलाते थे।

आज खनिज तेल कई तरह से काम में आने लगा है। उससे स्कूटर व गाड़ियां चलाने का पेट्रोल, डीज़ल, जलाने के लिए घासलेट मिलता है। घरों में जलाने वाली गैस भी उसी से मिलती है। मशीनों को चिकना करने का तेल प्लास्टिक, कोलतार यहां तक कि टेरिलीन कपड़े की कुछ किस्में और खाद भी खनिज तेल से बनती हैं। पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों से खनिज तेल मशीनों, वाहनों, हवाई जहाज़ों, आदि को चलाने और कई चीज़ें बनाने के काम में बहुत आने लगा। तब से इसकी बराबर मांग बढ़ी।

खोज के बाद ईरान के पश्चिमी भागों में खनिज तेल के कई क्षेत्र मिले। इनमें तेल का भंडार भी बहुत था। मांग के कारण नलकूपों द्वारा बड़े पैमाने पर तेल निकाला जाने लगा। (चित्र 8) तेल निकालकर, पाईप-लाईनों द्वारा फारस की खाड़ी तक लाया जाता है। आमतौर पर कच्चा तेल ही विदेशों को

चित्र 8. खनिज तेल के कुएं

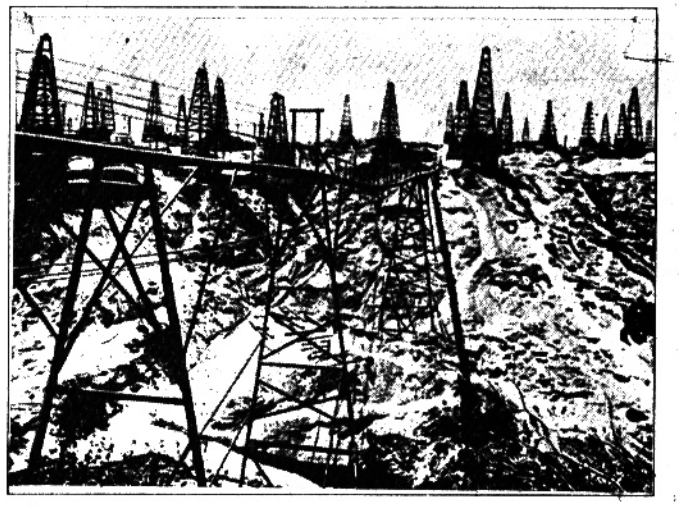

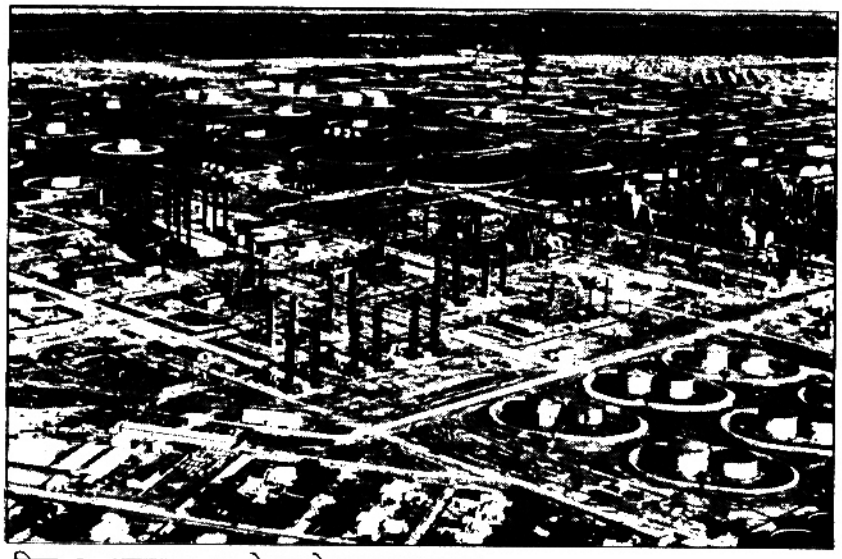

चित्र 9. अबादान का तेल शोधक कारखाना

भेज दिया जाता है। कुछ तेल अबादान शहर के तेल शोधक कारखाने में साफ किया जाता है।

तेल बेचने से ईरान को बहुत धन मिला है। इस धन से ईरान के लोगों ने स्कूल, अस्पताल, सड़कें, वाहन और रोज़ के काम की अनेक चीज़ों का इंतज़ाम किया है।

क्या तुम पता लगा सकते हो कि अपने देश को खनिज तेल बेच कर धन मिलता है, या भारत ईरान व अन्य देशों से तेल खरीदता है?

ईरान के उद्योग

अब ईरान में बहुत सी चीज़ों के कारखानें भी स्थापित हो गए हैं। ईरान में अब मोटर गाड़ियां, बिजली का सामान, कपड़ा, चमड़े व ऊन की चीज़ें बनने लगी हैं।

ईरान संसार भर में गलीचों या कालीनों के लिए प्रसिद्ध है। यहां ऊन की कालीनें बनाने का बहुत पुराना धंधा है।

भेड़ों से मिलने वाली ऊन को बुन कर कालीन या गलीचे बनाए जाते हैं। ये घरों और तंबुओं में बिछाकर बैठने के काम आते हैं। ये रोएंदार होते हैं और इनमें आकर्षक रंगों में सुन्दर बेलबूटे बने होते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. ईरान की बनावट कटोरे जैसी क्यों बताई गई है?
2. कैसे इलाके को रेगिस्तान कहते हैं? ईरान के किस हिस्से में रेगिस्तान है?
3. ईरान में अधिक नदियां क्यों नहीं हैं? छोटी नदियां बीच के पठार में आकर सूख क्यों जाती हैं?
4. नखलिस्तान किसे कहते हैं? यहां लोगों को बसने के लिए क्या मिलता है?
5. ईरान के किस भाग में वन होते हैं और क्यों?
6. उत्तरी ईरान के लोग खेती क्यों करते हैं? वहां क्या पैदा होता है?
7. खनिज तेल का महत्व तीन वाक्यों में लिखो।
8. ईरानी लोग कौन से काम धंधे करते हैं - उनकी सूची बनाओ।